मधुबन ओम् शान्ति अंक 293 दिसम्बर 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(12-11-16)

परमप्यारे सर्व के हितकारी मीठे मीठे शिवभोलानाथ बाप के अति प्यारे, बापदादा के लाडले सदा बेगमपुर के बेफिक्र बादशाह, सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - प्यारे अव्यक्त बापदादा की यह सुहावनी सीजन दिल को कितनी राहत देने वाली है, देश विदेश चारों ओर से बाबा के अनेकानेक नये पुराने बच्चे बापदादा से सम्मुख मिलन मनाने, मीठी दृष्टि और वरदानों से अपनी झोली भरने पहुंच रहे हैं। शान्तिवन में तो हजारों भाई बहिनों की बहुत अच्छी रिमझिम है।

संगमयुग पर हम सबकी यह जीवन यात्रा तो बाबा के साथ-साथ है। जब से बाबा के बने हैं बाबा साथ है। भले हम सब एक हैं, एक के हैं फिर भी हमारा यह जो आपस में भाई बहन का रिश्ता है, बड़ा अच्छा लगता है, सभी बड़े प्यारे लगते हैं। वायुमण्डल कितना सच्चाई और प्रेम वाला है। हम सब जैसे उड़ रहे हैं, धरती पर पांव नहीं हैं। उड़ने में मजा आता है ना। लेकिन उड़ वही सकते जो डबल लाइट फरिश्ते हैं। न कोई व्यर्थ चिंतन है, न कोई चिंता है। बाबा चला रहा है हम सब खुशी से चल रहे हैं। बाबा की दृष्टि इतनी महासुखकारी है। मैं तो हमेशा कहती हूँ बाबा तू कितना अच्छा है जो गोद बिठाके, गले लगाया, गले लगाके पलकों में बिठाया, पलकों में बिठा करके सारी विश्व में घुमाया। मुझे तो 40 साल विश्व की सेवा करने का भगवान ने भाग्य दिया। बाबा मेरा कैसा है, वो बताने के लिये 4-5 मिनट शान्ति में बैठो तो लगेगा मैं कितनी खुशनसीब हूँ, जो बाबा की दृष्टि सुख शान्ति प्रेम आनन्द से भरपूर कर रही है। वन्डर है जो बाबा इतनी शक्ति देता है। जब हम सोल-कॉन्सेस हैं तो लाइट हैं, लवफुल हैं फिर ऊपर वाला शक्ति देता है तो माइट आ जाती है। बाबा ने समय को सफल करने के लिये कितनी अच्छी समझ वा ट्रेनिंग दी है कि तू आत्मा मेरी हो, यह शरीर निमित्त मात्र है। बाबा का बनकर जितना न्यारा उतना ही प्रभु का प्यारा बनना है। इस लाइफ में जितना परमात्मा का प्यार मिला है और हम जो प्यार से पालना ले रहे हैं इससे लगता है देवता तो पीछे बनेंगे उसके पहले फरिश्ता बने हैं। कहा जाता है पंछी और परदेशी दोनों किसी के मीत नहीं होते हैं इसलिये वो फ्री हैं, सदैव उड़ते रहते हैं। कोई भी कर्म में कहीं पर भी किसी के स्वभाव संस्कार में भी कोई फीलिंग नहीं है। तो हरेक अपनी लाइफ को देखे कि मैं खुशनसीब हूँ! खुशी पूछनी हो तो मेरे से पूछो। सदा खुश रहना बहुत बड़ी बात है। मैं तो जिसे भी देखती हूँ तो सबके गुण बड़े अच्छे दिखाई देते हैं। सब अच्छे हैं, यहाँ से पाँव तक सर्वगुण सम्पन्न बन रहे हैं। परन्तु अभी इसके आगे 16 कला सम्पूर्ण भी बनना है। कोई भी जड़ या चैतन्य में लगाव वा झुकाव न हो। बाबा ने ऐसी सिम्पल लाइफ स्टाइल बनाई है जो एक दो को देख करके जैसे कलम लग गया है, अच्छा बगीचा बन गया है। हम सब इस बगीचे के खुशबूदार फूल बन गये हैं। बोलो, ऐसी खुशबू चारों तरफ फैल रही है ना।

बाकी आप सबने बापदादा के मिले हुए होमवर्क अनुसार जरूर मन की डांस करते, मन का मौन रख बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव किये होंगे। बापदादा को जरूर सभी अपनी-अपनी रिजल्ट देंगे ही।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद ...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"आज्ञाकारी, वफादार बनो"

1) बाप द्वारा जो भी आज्ञायें मिली हुई हैं, वह आज्ञायें ही बाप के कदम हैं। तो कदम पर कदम रखकर चलते चलो। बच्चे माना ही बाप के फुट-स्टैप (पद-चिन्ह) पर चलने वाले। जैसे बाप ने कहा ऐसे किया। बाप का कहना और बच्चों का करना - इसको कहते हैं नम्बरवन आज्ञाकारी।

2) जो बाप का डायरेक्शन है, श्रीमत है, उसको उसी रूप में पालन करना - इसको कहते हैं आज्ञाकारी बनना। ब्राह्मण बच्चों को हर बात में जो डायरेक्शन मिले उसमें एवररेडी रहना है। संकल्प मात्र भी मनमत वा परमत मिक्स न हो, तब कहेंगे श्रीमत पर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा।

3) सम्पूर्ण वफ़ादार वह है जिसके संकल्प वा स्वप्न में भी सिवाय बाप और बाप के कर्त्तव्य वा बाप की महिमा, बाप के ज्ञान के और कुछ भी दिखाई न दे। एक बाप दूसरा न कोई। ऐसे वफादार, फरमानबरदार की प्रैक्टिकल चलन में सच्चाई और सफाई दिखाई देगी। अगर एक संग सदा बुद्धि की लगन है तो अनेक संग का रंग लग नहीं सकता।

4) सम्पूर्ण वफादार आत्मा का मुख्य गुण होता है, भले उसे अपनी जान देनी पड़े लेकिन वह उसकी परवाह किये बिना हर वस्तु की सम्भाल करेंगे। कोई भी चीज़ व्यर्थ नुकसान नहीं करेंगे। अगर संकल्प, समय, शब्द और कर्म इन चारों में से कोई को भी व्यर्थ गंवाते हो वा नुकसान के खाते में जाता है तो उसे सम्पूर्ण वफादार कैसे कहेंगे!

5) बाप की आज्ञा है 'मुझ एक को याद करो'। अगर इस आज्ञा को पालन करते हैं तो आज्ञाकारी बच्चे को बाप की दुआयें मिलती हैं और सब सहज हो जाता है। जैसे लौकिक संबंध में भी आज्ञाकारी बच्चे पर माँ बाप का बहुत स्नेह होता है। वह है अल्पकाल का स्नेह और यह है अविनाशी स्नेह। यह एक जन्म की दुआयें अनेक जन्म साथ रहेंगी।

6) बापदादा ने अमृतवेले से लेकर रात के सोने तक मन्सा-वाचा-कर्मणा और सम्बंध-सम्पर्क में कैसे चलना है वा रहना है - सबके लिए श्रीमत अर्थात् आज्ञा दी हुई है। हर कर्म में मन्सा की स्थिति कैसी हो उसका भी डायरेक्शन वा आज्ञा मिली हुई है। उसी आज्ञा प्रमाण चलते चलो। यही परमात्म दुआयें प्राप्त करने का आधार है। इन्हीं दुआओं के कारण आज्ञाकारी बच्चे सदा डबल लाइट, उड़ती कला का अनुभव करते हैं।

7) बापदादा की आज्ञा है - किसी भी आत्मा को न दु:ख दो, न दु:ख लो। तो कई बच्चे दु:ख देते नहीं हैं, लेकिन ले लेते हैं। यह भी व्यर्थ संकल्प चलने का कारण बन जाता है। कोई व्यर्थ बात सुनकर दु:खी हो गये, ऐसी छोटी-छोटी अवज्ञायें भी मन को भारी बना देती हैं और भारी होने के कारण ऊंची स्थिति की तरफ उड़ नहीं सकते।

8) बापदादा की आज्ञा मिली हुई है - बच्चे न व्यर्थ सोचो, न देखो, न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ कर्म में समय गंवाओ। आप बुराई से तो पार हो गये। अब ऐसे आज्ञाकारी चरित्र का चित्र बनाओ तो परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे।

9) बाप की आज्ञा है बच्चे अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो, हर कर्म कर्मयोगी बनकर, निमित्त भाव से, निर्माण बनकर करो। ऐसे दृष्टि-वृत्ति सबके लिए आज्ञा मिली हुई है। यदि उन आज्ञाओं का विधिपूर्वक पालन करते चलो तो सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शान्त स्थिति अनुभव करते रहेंगे।

10) बाप की आज्ञा है बच्चे तन-मन-धन और जन –इन सबको बाप की अमानत समझो। जो भी संकल्प करते हो वह पॉजिटिव हो, पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। बॉडीकान्सेस के ''मैं और मेरेपन से'' दूर रहो, यही दो माया के दरवाजे हैं। संकल्प, समय और श्वांस ब्राह्मण जीवन के अमूल्य खजाने हैं, इन्हें व्यर्थ नहीं गंवाओ। जमा करो।

11) समर्थ रहने का आधार है - सदा और स्वत: आज्ञाकारी बनना। बापदादा की मुख्य पहली आज्ञा है - पवित्र बनो, कामजीत बनो। इस आज्ञा को पालन करने में मैजारिटी पास हो जाते हैं। लेकिन उनका दूसरा भाई क्रोध - उसमें कभी-कभी आधा फेल हो जाते हैं। कई कहते हैं - क्रोध नहीं किया लेकिन थोड़ा रोब तो दिखाना ही पड़ता है, तो यह भी अवज्ञा हुई, जो खुशी का अनुभव करने नहीं देगी।

12) जो बच्चे अमृतवेले से रात तक सारे दिन की दिनचर्या के हर कर्म में आज्ञा प्रमाण चलते हैं वे कभी मेहनत का अनुभव नहीं करते। उन्हें आज्ञाकारी बनने का विशेष फल बाप के आशीर्वाद की अनुभूति होती है, उनका हर कर्म फलदाई हो जाता है।

13) जो आज्ञाकारी बच्चे हैं वे सदा सन्तुष्टता का अनुभव करते हैं। उन्हें तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता स्वत: और सदा अनुभव होती है। 1- वे स्वयं भी सन्तुष्ट रहते। 2- विधि पूर्वक कर्म करने के कारण सफलता रूपी फल की प्राप्ति से भी सन्तुष्ट रहते। 3- सम्बन्ध-सम्पर्क में भी उनसे सभी सन्तुष्ट रहते हैं।

14) आज्ञाकारी बच्चों का हर कर्म आज्ञा प्रमाण होने के कारण श्रेष्ठ होता है इसलिए कोई भी कर्म बुद्धि वा मन को विचलित नहीं करता, ठीक किया वा नहीं किया। यह संकल्प भी नहीं आ सकता। वे आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते हैं क्योंकि वे कर्म के बन्धन वश कोई कर्म नहीं करते। हर कर्म आज्ञा प्रमाण करने के कारण परमात्म आशीर्वाद की प्राप्ति के फल स्वरूप वे सदा ही आन्तरिक विल पावर का, अतीन्द्रिय सुख का और भरपूरता का अनुभव करते हैं।

15) आज्ञाकारी बच्चे बिना श्रीमत के एक सेकण्ड या एक पैसा भी यूज़ नहीं कर सकते। जब सब परमात्मा का हो गया तो अपने प्रति या आत्माओं के प्रति यूज कैसे कर सकते। डायरेक्शन प्रमाण कर सकते हैं। नहीं तो अमानत में ख्यानत हो जायेगी। थोड़ा भी धन बिना डायरेक्शन के कहाँ भी कार्य में लगाया तो वह धन, मन को खींच लेगा। और मन, तन को खींच लेगा और परेशान करेगा।

16) आज्ञाकारी बनना - यही बाप समान बनने की सहज विधि है। आज्ञाकारी बच्चे सदा श्रीमत पर चलते रहते, उसमें मनमत वा परमत की एडीशन नहीं करते, इसलिए कोई भी परिस्थिति उन्हें नीचे नहीं ला सकती, वे सहज ही विघ्न-विनाशक बन जाते हैं।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 28-04-13 *मधुबन*

"अपने बोझ बाप को देकर लाइट बनो, हर काम लाइट रहकर करो तो बाबा की माइट मिलती रहेगी"

(दादी जानकी)

आज की सभा को देख एक गीत याद आता है – रचना जिसकी इतनी सुन्दर, वह रचयिता कैसा होगा! रचना को देख रचता याद आ जाता है। हर एक को अनुभव है ख्वाब ख्यालों में भी नहीं होगा हम भगवान का बच्चा बनके नाचेंगे। समझा था कृष्ण के साथ गोप-गोपियाँ डांस करती हैं परन्तु हम अभी स्वयं परमात्मा बाप के साथ डांस कर रहे हैं। सेवा है - डांस। डांस कौन करता है? डांस में क्या करते हैं? हाथ पाँव ऐसे ऐसे करते हैं। चलते-फिरते, हंसते-गाते कई आत्माओं को प्रेरणा देने वाले बनो। बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है ...। अब बाबा कहता है सारी विश्व का मालिक बनने वाले हो तो सारी विश्व को खुश करना है, ज्ञान में हो या न हो।

बाबा सत्य है, नॉलेज सत्य है तो मुझे क्या बनना है? सत् चित आनंद स्वरूप। फिर क्या करने का है? कराने वाला करा रहा है, मुझे सिर्फ हाज़िर होना है। जितना करते हैं उतना अच्छा रहता है, यह अच्छी हॉबी हो जाती है। जो भी बोझा है वो मेरे को दे दो, यह बाबा ऑफर करता है तो बोझ बाबा को दे करके हल्के हो जाओ, लाइट बनो और लाइट से काम लो। लाइट माना हल्के भी बनते हैं फिर लाइट से काम भी लाइट होता है। फिर माइट बाबा देता है और एवरीथिंग राइट हो जाता है, इज़ी है ना। शिवबाबा जैसा कोई नहीं, ब्रह्माबाबा जैसा कोई नहीं, हम बच्चों जैसा भी कोई नहीं है। ऐसे इतने बड़े संगठन में समय को सफल करना, स्नेह, सहयोग, सहानुभूति देना। जितना करो उतना कराने वाला हमारे में हक लगाके कराता है। ऐसे हम एक दो के गुण उठायें, किसी के भी अवगुण को कभी भी चित्त पर न रखें। किसी का अवगुण चित्त पर रखना, इसकी सज़ा यह है कि ज्ञान धारण नहीं होगा, अमृतवेले नींद आयेगी, क्लास में लेट आयेंगे, तो यह भोगना है। तो सारा समय संकल्प उस भोगने में ही खत्म होंगे तो निरंतर योगी कब बनेंगे? बाबा तो चाहता है, मेरा बच्चा निरंतर योगी रहे।

जिसकी बुद्धि में रहता है कि योग से बहुत फायदे हैं तो उसकी बुद्धि कभी भी इधर-उधर नहीं जाती है, न कहाँ चलायमान होंगे, न कोई परिस्थिति में डोलायमान होंगे। तो स्थिर बुद्धि से, एकाग्रता की शक्ति से अडोल-अचल स्थिति बनाना माना अकालतख्त पर बैठना। मनुष्यों को मौत का डर है, हमको मौत का डर नहीं है क्योंकि पता है मौत अच्छा ही होगा इसलिए कोई डर नहीं है। ऐसे कर्म बाबा ने सिखलाये हैं और पुराने विकर्म विनाश कर लिये हैं तो कोई भय नहीं है। तो ऐसे सतयुगी दुनिया को सामने रख ऐसी स्थिति बनानी है जो नेचुरल सतयुग में होगा। अच्छा।

29-4-13

"विचार सागर मंथन करो तो राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी" (दादी जानकी)

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है सबसे बड़ा फायदा तो कोई और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। ऊपर-ऊपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती है। शंख जो होता है वो सागर की रचना है इसलिए उसका आवाज कितना दूर दूर तक गूँजता है। विचार सागर मंथन से लगेगा यह सागर की रचना है। कोई और बात का विचार न अपने लिये आता है, न किसी के लिए आता है। शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं। सोचने से नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरी दिल होती है आप भी ऐसे बार-बार मीटिंग फीटिंग नहीं करो, क्या जरुरत है! फ्री रहो। हाँ, फैमिली फीलिंग की मीटिंग जरुरी है क्योंकि परिवार प्यारा लगता है।

विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है, अगर हम अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ्राखदिल है उसका फायदा लो। विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर जरा भी मैं दु:ख महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दु:ख दूर नहीं कर सकती हूँ। लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हल्कापन लगेगा। 5 हो या 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है।

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है इसलिए क्यों न कहो। आयी है पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं कई डाक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

बाबा कहता है कोई बोझ हो, कोई संकल्प हो तो तुम सिर्फ मुझे दे दो, ताकि तुम साफ रहो। साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। माया छुयेगी भी नहीं, पर कर्मभोग, थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ, ... परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात है। तो ऐसे एक दो से सीखने की भावना हो, तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे को तकलीफ हो, न मेरे से किसी को तकलीफ हो। किसी को शान्ति प्रेम भले मिले, जितना मिले पर थोड़ा भी कोई मेरा एक शब्द या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा।

तो बाबा यह विधि सिखाता है, महिमा करके योग्य बनाना। बाबा के काम का योग्य बनाना, मैं इस काम के लिए हूँ क्या? अरे, क्या भाषा बोली? सम्भलके बोलो क्योंकि संगमयुग पर एक एक बोल अमूल्य है। जैसे बाबा का एक एक बोल अनमोल है, ऐसे हमारी भी बहुत वैल्यू है। जो पुरुषार्थ करना है, अब करना है मुझे करना है, समय करा रहा है, बाबा करा रहा है। कोई बड़ी बात नहीं है। गुप्त पास विथ ऑनर में आना है। क्या समझा है? कोई समझे ना समझे लेकिन बाबा तो समझता है ना। अगर हम खज़ानों को सम्भालके नहीं रखते हैं तो उसे प्राप्ति का कदर नहीं होता है।

जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही थोड़ा भी हमारे अन्दर किचड़ा होगा तो औरों में भी बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म अन्दर बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबीन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन का या तन का, तो वो इधर उधर नहीं फेंको क्योंकि यह भी ईश्वरीय कायदे हैं ना। ईश्वरीय कायदे प्रमाण चलो तो सब ठीक है। आजकल दुनिया में लव का दिवाला है न लव देना जानते हैं, न लव लेना जानते हैं वह कायदेपर क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते हैं। मैं शरीर छोडूं तो क्या याद करेंगे थी तो अच्छी परन्तु... यह नहीं चाहिए वो यादगार नहीं है। तो दातापन के संस्कार इमर्ज करके ब्राह्मणों को स्नेह और सम्मान से प्यार दो और अपने से आगे रखो। इसमें थोड़ी भी बॉडी-कॉन्सेस की नेचर खतरा है इसलिए छोड़ो तो छूटेंगे। कोई बात पकड़के रखेंगे या मैं किसी की बात पकड़के रहेंगी तो मैं फंसी रहेंगी तो नुकसान किसको? कोई भी बात अगर पकड़के रखी तो कर्मबन्धन बढ़ गया। बाबा कहता है तुम्हारा चुक्तू करने आया हूँ, मेरी याद में रहो तो जो भी कुछ गलत है वो अभी प्रेजेन्ट सब माफ कर दूँगा, पुराने नाश भी कर दूँगा। अधर्म का नाश और सतयुग की स्थापना का दोनों काम इकट्ठा कर रहा है, इसलिए ऐसे बाबा को सदा प्यार से याद करना यानि जैसे सगाई होती है बस सम्बन्ध जुट जाता है। जब तक सगाई नहीं होती है तब तक एक दूसरे को देखते रहते, पर हमारी तो सगाई और शादी साथ-साथ हो गई। जिस दिन सगाई हुई, पसंद आया ना कर लो शादी। बाबा कहता है अगर शादी की है तो औरों को जन्म देते जाओ अच्छी तरह से अर्थात् आप समान बनाओ।

"जब किसी भी देहधारी से कनेक्शन, रिलेशन और कम्यूनिकेशन न हो तब उड़ता पंछी बन उड़ेंगे" (दादी जानकी)

(विशेष टीचर्स बहिनों प्रति)

अभी ऐसा पुरुषार्थ करो जो ज्यादा बोलना न पड़े, सोचना भी न पड़े क्योंकि हमारी यह जीवन यात्रा सच्चाई शान्ति और प्रेम से चल रही है। यात्रा जब कहते हैं तो यहाँ चारों सब्जेक्ट ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चारों में परफेक्ट है ना! पूरी मार्क्स है ना। यह चेक करना है जरूर। ज्ञान कोई लम्बा चौड़ा नहीं है बस, हिस्ट्री जाग्राफी पता है, 5 हजार साल में 84 जन्म लिये हैं, परन्तु 21 जन्मों के लिये राजाई पाने के लिये मेहनत भी की है। सुखधाम में आने की, शान्तिधाम में जाने की दोनों तैयारी अभी करनी है। शान्तिधाम में जायेंगे तो बाबा के साथ ही जायेंगे। बरात में नहीं जायेंगे। इसके लिए दो बातें 1- देही-अभिमानी स्थिति बनानी है। 2- फॉलो फादर करना है, बस। सामने बाबा को ऑखों से देख रहे हैं और दिल में समा रहे हैं। अच्छा है, कोई थोड़े समय में जम्प लगाके राज्य पद पावे, यह भी कोई ऐसे मस्त होते हैं। मेरे को बाबा कहते मस्त फकीर, बेफिकर बादशाह। है फकीर पर मस्ती बेफिक्र। कोई बात का फिकर नहीं है। जो निश्चय बुद्धि हैं वो निश्चिंत रहते हैं। कोई चिंता नहीं है, कोई फिकर नहीं है क्योंकि थोड़े समय में बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना है। आप कहेंगे हम कैसे बनेंगे! अभी अभी तो आये हैं, बाबा कहता है ख्याल नहीं करो तुम बाबा को देखो, बाबा पलकों पर बिठाके ले जायेगा। बाबा इतना होशियार है, गले लगाता है। बच्चा माला का मणका बन जाये और पलकों में इसलिए बिठा देता ताकि बच्चे को उड़ना आसान हो जाये, उड़ता पंछी बन जाये। पुरुषार्थ में मेहनत नहीं हो सिर्फ उड़ जा रे पंछी...। इस देश से हमारा कोई कनेक्शन वा रिलेशन नहीं है, कोई कम्यूनिकेशन नहीं है।

बाबा कहते हैं ऐसा मास्टर कहीं नहीं मिलेगा, सुबह को कोर्स किया और शाम को कराने बैठ गई क्योंकि दिल साफ है, दिमाग ठण्डा है, स्वभाव मीठा है। आजकल कोई पूछता है ना मैं क्या पुरुषार्थ करूँ! तो मैं कहती हूँ दिल खुश

हो इसलिए कल सभी ने दिलखुश मिठाई खाई ना क्योंकि मधुबन, बाबा और मुरली तीनों से हमारा अच्छा प्यार है। मैं कौन, मेरा कौन? देह-अभिमान गया तो दिलखुश मिठाई खा ली।

हम सेन्टर पर रहते समझते थे यह तीन पैर पृथ्वी सेवा के लिये मिली हुई हैं। तो जब बुद्धि में रहता कि सेवा क्या है और याद क्या है। सर्वशक्तिवान बाप की याद ऐसी हो जो सेवा समाई हुई हो। बाप एक है, हम अनेक बच्चे हैं, पर हरेक महसूस करते हैं कि हमारे में जो शक्ति है, वो सर्वशक्तिवान बाप की है। उसमें भी बाबा कहते सहन करना, स्नेह से रहना, उसमें रूहानियत आत्म-अभिमानी स्थिति बाबा की याद, अन्दर संकल्प भी ऐसे शुद्ध, स्वप्न भी ऐसे संकल्प भी ऐसे हो, स्वप्न में वही दिखाई पड़ता है। ऐसे मीठे प्यारे बाबा, पहले मीठे कैसे, फिर प्यारे कैसे? मुझे भी पहले मीठा बनना है फिर प्यारा...। जब भी हम बाबा के बनें, बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। यह बचपन के दिन भुला न देना। हमारी दिल साफ और सच्ची हो तो मेरा साहेब राज़ी है। सच्ची दिल देख आप समझ सकते हो ना, साहेब राज़ी है ना। जिसके बच्चे हैं उसने चलना भी सिखाया है, बोलना भी सिखाया है। बाबा वन्डरफुल है। जैसे बाबा की दृष्टि सबको एक सेकण्ड में शान्ति में ले जाती है। तो मैं भी इसमें फॉलो करने में पीछे न रह जाऊं। इसके लिये मुखड़ा देख ले प्राणी, उसमें अपने आपको देखो। सिर्फ एक बाबा की कमाल है बिन्दी लगाने में, कहता है बच्चे बच्चे, यह दृष्टि सारे विश्व में चली जाये। ऐसा तीसरा नेत्र बाबा ने दिया है, ऑख खोली है, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक बना दिया है।

शान्ति और प्रेम है तो सब कुछ है क्योंकि देखा है अभी समझो हम बाबा से बातें कर रहे हैं, तो वायब्रेशन अच्छे आते हैं और अगर हम ऐसी कोई ऑख दिखाने वाली बात कर रहे हैं तो फिर वायब्रेशन कैसे होंगे। बाबा कहता है ऐसी कोई चलन न हो जिससे यज्ञ में विघ्न रूप बनें। बाबा के यज्ञ की सेवा में मन्सा वाचा कर्मणा तीनों ही हम चेक करें, मेरी मन्सा कैसी है? वाचा भी जैसी मन्सा होगी वैसी ही होगी और कर्मणा प्रैक्टिकली लाइफ सब देख रहे हैं। कैसे उठते, बैठते, खाते पीते हैं!

1999 का रिवाइज क्लास

"प्रवृत्ति में रहते ब्रह्मा बाप समान बेफिकर बादशाह रहने की युक्तियाँ

(गुल्जार दादी)

1) प्रवृत्ति में आजकल के जमाने में एक फिक्र जाता है तो दस आते हैं लेकिन वह हमारे लिए नहीं हैं क्योंकि हमारे पास आया, हमने बाबा को दे दिया बस। हम बेफिक्र बादशाह। दिल से दिया, दिल से बाबा को साथी बनाया तो कोई फिक्र नहीं। आप कहेंगे शिवबाबा तो है निराकार, हम तो साकार में हैं, लेकिन ब्रह्मा बाबा भी तो हमारे जैसा ही साकार था। अन्तिम जन्म था, आयु भी वानप्रस्थ अवस्था की थी, सब अनुभव था, व्यापार का, प्रवृत्ति का, भक्ति का.... सब अनुभव था। ब्रह्मा बनने के बाद भी कितनी आत्माओं के जीवन की जिम्मेवारी थी, फिर भी बेफिक्र रहे। और यह नया क्रान्तिकारी काम था, उस समय दुनिया के आगे यह एक चैलेंज थी। पवित्रता की बात जो लोगों के लिए असम्भव थी, कहते थे आग और कपूस साथ कैसे रह सकते हैं। साथ रहें और विकारों की आग न लगे, यह तो असम्भव है। तो आप सोचो बाबा के सामने कितने विघ्न आये होंगे। फिर भी बाबा बेफिकर बादशाह। ऐसे बाबा कहते बच्चे फॉलो करो। जब भी ऐसी कोई बात आती है, तो ब्रह्मा बाबा का सैम्पुल सामने देखो।

2) हमने बाबा को बचपन से देखा है, कभी भी बाबा के चेहरे पर फ़िकर की लहर नहीं देखी। बाबा को दो शब्द बहुत पक्के थे - बच्चे, नथिंग न्यु। दूसरा - यही शब्द बाबा के मुख पर था - बच्ची, जिम्मेवारी शिवबाबा की है, हम तो

निमित्त हैं। बाबा बैठा है। कुछ भी ऐसी बात हो जाये तो बाबा कहता बच्ची, इसमें भी अच्छाई भरी हुई है। मानो कुछ बुरा भी हो गया और हो रहा है लेकिन फिर भी बाबा कहते थे जो हो रहा है वो अच्छा, और जो हो गया है वो बहुत अच्छा, और जो होने वाला है वो और ही बहुत-बहुत-बहुत अच्छा। यह बाबा का स्लोगन था। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, निगेटिव को भी पॉजिटिव नज़र से देखते थे। कोई निगेटिव बात हो गई या मन में आ गई, तो कहते हैं यह तो बुरा हो गया, शिवबाबा तो भूल गया। उसी को ही सोचने में लग जाते हैं लेकिन ऐसे बुराई में अच्छाई क्या लेनी है। क्यों हुआ यह बुरा, जरूर कोई हमारी ही कमजोरी का कारण होगा।

3) हमने गलती नहीं की दूसरे ने की, इसलिए इसमें हमारा तो कोई कसूर नहीं है, इसने ही किया... लेकिन बाबा कहता था अच्छा उसने कसूर किया आपने नहीं किया, इसलिए आप बहुत सच्चे और अच्छे हो लेकिन उसने समझो क्रोध किया और हमने उसके क्रोध को फील किया। मेरे पास फीलिंग की बीमारी आई। तो वह बीमार हुआ क्रोध में और आप बीमार हुए फीलिंग में तब तो मन चल रहा है। अन्दर धारण हुआ, तभी तो आपके मन में क्यों, क्या, संकल्प चल रहे हैं। बाबा का स्लोगन क्या है - न दु:ख दो, न दु:ख लो। देना तो नहीं है लेकिन दूसरा कोई देता है तो लेना भी नहीं है, तब तो अच्छा-अच्छा हुआ। जो बुरा काम हुआ उसको निगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन कर उससे शिक्षा ले लो। तो आगे से मुझे क्या शिक्षा मिली, आगे से मुझे अपने में क्या करेक्शन करनी है? यह सोचो तो निगेटिव भी पॉजिटिव हो जायेगा। तो ऐसी बाबा की शिक्षा थी, ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी। तो क्या ऐसा हम अपनी लाइफ में प्रैक्टिकली नहीं कर सकते हैं। बेफिक्र बादशाह हम नहीं बन सकते हैं? जैसे बाप ने किया वैसे हम करें, तो हो सकता है इसीलिए हमारा योग नीचे करने वाली, यह निगेटिव बातें होती हैं।

4) एक निगेटिव और दूसरा व्यर्थ। छोटी सी बात को बड़ा करना, यह हमारे हाथ में है। बड़ी बात को छोटी करना - यह हमारे हाथ में है। यह नेचर होती है। बड़ी बात को नथिंग न्यू समझो, मुझे भविष्य के लिए क्या करना है, वह सोचो और फुलस्टॉप लगाओ क्योंकि बीती को सोचने से फ़ायदा? कुछ नहीं। हो गया, उसको सोचने से फायदा क्या है? बदल जायेगा, नहीं। वह तो हो गया। जैसे कहते हैं कि तीर कमान से निकल गया, वह फिर वापस आयेगा क्या? नहीं इसीलिए योगी जीवन है हमारी, योगी जीवन में बेफिक्र बादशाह है तो योग लगेगा। कोई फिक्र है यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, यह कैसे हुआ... यह फिकर होगा तो फिर योगी जीवन नहीं होगी। दो घण्टे के योगी, चार घण्टे के योगी और बाकी भोगी हुए और क्या हुए? तो ऐसी हमारी निरन्तर योगी जीवन हो।

5) विदेही का अर्थ ही है - देह में हैं लेकिन देह की कोई भी आकर्षण, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, कोई भी हमको अपने तरफ नहीं खींचे। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"विशेष गीता पाठशाला चलाने के निमित्त बने हुए भाई-बहनों प्रति"

''प्रवृत्ति में रहते पर वृत्ति में रहो''

आप सबको देख प्यारे बाबा का एक बोल याद आता। बाबा कहते तुम बच्चों को सच्ची-सच्ची गीता सबको सुनानी है, तुम घर-घर में सच्ची गीता पाठशाला खोलो। गीता के भगवान को सिद्ध करो, इसी पर ही तुम्हारी विजय होनी है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम से मनुष्यों का इतना ध्यान नहीं जाता लेकिन जब सुनते सच्ची गीता पाठशाला तो नाम सुनने से ही अन्दर आता चलकर देखें यहाँ क्या सुनाते हैं।

1) आप सब सच्ची गीता पाठशाला के निमित्त बने हुए सच्चे सेवाधारी हो। जो निमित्त बनते उनकी बाबा अपरमअपार महिमा गाता। ब्रह्माकुमारियों ने तो अपनी जीवन सेवा लिए अर्पित की, उन्हों का महान भाग्य है लेकिन उनसे भी अधिक भाग्य आपका है। उन्होंने सब कुछ त्याग कर सेवाकेन्द्र बनाया है। परन्तु आपको तो बाबा ने दो घोड़े दिये हैं, जिन पर हाथ रखकर टप-टप करके चलना है। दो घोड़े ब्रह्माकुमारियों

को नहीं हैं। शोकेस के सैम्पुल आप हैं। शो केस में हमेशा सैम्पुल को रखा जाता क्योंकि आप ही दूसरों के सामने बाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष करने वाले हो इसलिए आपकी बहुत वैल्यु है। तुम्हारे लिए यह पाठ है कि रहना है प्रवृत्ति में लेकिन पर वृत्ति से रहना है। आपको सबके साथ में रहते नष्टोमोहा का पाठ पढ़ना है। यह सैम्पुल आप लोगों का है। ब्रह्माकुमारियों के आगे कोई भी पेपर आये तो नो फिकर क्योंकि वह बाबा की सर्विस पर हैं, परन्तु आपके आगे चार पेपर सदा ही खड़े हैं। कहा जाता है ये ज्ञान इतनी ऊंची मंजिल है, चढ़े तो चाखे ज्ञान-रस, गिरे तो चकनाचूर.... यह है लम्बी खजूर। यह कहावत प्रवृत्ति में रहने वालों के लिए है। चढ़ना भी जरूर है, रस पीना भी जरूर है लेकिन चढ़े तो कैसे? क्योंकि इधर है प्रवृत्ति, उधर है समाज, इधर है धन्धा और उधर है बाबा। यह सब पेपर आपके सामने हैं।

2) प्रवृत्ति वालों को अनेक चिंतायें रहती, आज बेटी बड़ी हुई है, शादी करनी होगी, यह करना होगा। इसके लिए धन्धा करें, पैसा इकट्ठे करें। चिन्ताओं की टोकरी सदैव सिर पर रहती। बहू बेटी में ममता हो जाती। ऐसे सबके साथ रहते हुए, सब पेपर सामने होते हुए नष्टोमोहा रहें। यह सैम्पुल आप सबका है। आपको बुद्धि में अगर रहता बाबा यह प्रवृत्ति तेरी है तो सदा बेफिकर रहते। ऐसे कमल फूल का प्रैक्टिकल मिसाल आप लोग हैं।

3) गृहस्थी है उसके लिए धन्धा भी जरूर करना पड़ता, आज धन्धा अच्छा चलता, कल नहीं चलता। कई प्रकार के पेपर आपके सामने आते, अज्ञान में तो मनुष्य को धन्धे में अगर घाटा हो जाये तो शॉक आ जाता परन्तु ज्ञानवान कहते यह तो ड्रामा है। फिकरातों के बीच रहते बेफिकर रहना। निरसंकल्प रहना, ये सैम्पुल आप हैं। जो कमाते हुए भी अनासक्त रहते वही सैम्पुल बनते हैं। आज का धन्धा-धोरी भी क्या है? आज नौकरी कैसी है, कल कैसी है। यह अप-डाउन रोज़ होता। परन्तु यह सब होते भी नथिंगन्यु। अज्ञानियों में टेन्शन रहता और हम कहते नो टेन्शन बट अटेन्शन।

4) समाज में रहते समाज को निभाना भी और समाज की गाली भी खाना, कभी समाज दुश्मन बनेगी, कभी कहेगी बहुत अच्छा। यह तो पेपर आयेंगे ही। इन सबको पार करते हुए चलना यह है आप सबका सैम्पुल। अब आओ ब्राह्मणों की दुनिया में यहाँ भी कई पेपर आते। जायेंगे सर्विस करने, सर्विस अच्छी हुई तो खुशी होगी। नहीं हुई तो दिलशिकश्त होंगे। कभी-कभी आपस में भी मित्र के बजाए परममित्र बन जाते। यह संस्कारों का भी बहुत कड़ा पेपर है। किसी को मित्र बनाना तो सहज है परन्तु परममित्र को मित्र बनाना यही मीठी-मीठी पढ़ाई है।

5) सारी दुनिया को मित्र बनाना, उसकी सहज युक्ति है बाबा को अपना सच्चा सखा बना लो।

हम सब ओपेन थियेटर में बैठे हैं, हमें सारी दुनिया देख रही है, हम बाबा के बच्चे हैं, नूरे रत्न हैं, आंखों के तारे हैं, बाबा ने हमें नयनों पर बिठाया है, हम आप साधारण नहीं है। लेकिन हम असाधारण अलौकिक हैं, हमारा बाबा निराला, हम भी निराले, बाबा हमेशा कहते बड़े तो बड़े छोटे शुभान अल्ला, आप सब बाबा की छत्रछाया, शक्ति के नीचे बैठे हो, नहीं तो आज का जमाना बहुत खराब है, आप सब एक दृढ़ संकल्प लेकर बाबा की गोद में आये हो। तो अपने से रुह-रिहान करनी है कि हमें बाप के समान बनना है। सम्पन्न बनना है, समीप रहना है।

6) जग को परिवर्तन करने वालों को पहले स्वयं को परिवर्तन करना है। मेरे जीवन का हमेशा लक्ष्य रहता बाबा की पहले दिन की श्रीमत है - आज्ञाकारी, फरमानबरदार, वफादार। दूसरा है त्याग, तपस्या और सेवा इन सबका आधार है - श्रीमत। श्रीमत में रहने से हमारी तथा सर्व की सेवा है, इसमें ही कल्याण है।

7) ईश्वरीय मर्यादा कहती है तुम्हें अन्तर्मुख रहना है, मेरी पसन्दी है बाहर्मुखता, अगर मैं अन्तर्मुख न रहूँ तो दूसरों को कैसे कहेंगे। तो ये कौन-सी मैंने सर्विस की? बाहर्मुखता की मेरी नेचर है, अन्तर्मुखता बाबा की श्रीमत है, तो मुझे आज्ञाकारी बनना है। अगर नहीं रहती हूँ तो क्या मैंने आज्ञा का पालन किया या उल्लघंन किया? आज्ञा पालन करने में बाप का आशीर्वाद मिला, न करने में श्राप।